25/02/2026

Dr. Arun Kumar Ray
Assistant Professor
Deptt. of Psychology
U.R. College Rosera Samastipur
Semester-III खंड-2024-2028
Paper-(MJC) III खंड

TOPIC :- Emotional Behaviour

* सुख-दुःख की भावना - संवेग में अपनी विशिष्ट भावना के अतिरिक्त निःसन्देह रूप से दुःख या सुख की भावना होती है। विभिन्न प्रकार के संवेगों में से कुछ सुख उत्पन्न करते हैं जबकि कुछ दुःख। प्रेम का संवेग सुख उत्पन्न करता है।
* शारीरिक परिवर्तन - संवेग की अवस्था में व्यक्ति के शरीर में मुख्य रूप से दो प्रकार के परिवर्तन आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन एवं बाह्य शारीरिक परिवर्तन उत्पन्न होते हैं हृदय की धड़कन एवं रक्तचाप में परिवर्तन, श्वसन क्रिया की तीव्रता अन्तःस्रावी ग्रन्थियों से हॉर्मोन्स का निकलना व पाचन-क्रिया का धीमा पड़ना या रुक जाना आदि।
* मानसिक परिवर्तन - संवेग की स्थिति में व्यक्ति की मानसिक दशा में भी अनेक परिवर्तन परिलक्षित होते हैं।
* क्रिया की प्रवृत्ति - स्टाउट के अनुसार संवेग में एक निश्चित दिशा में क्रिया की प्रवृत्ति होती है। इसी प्रवृत्ति के कारण व्यक्ति कुछ न कुछ अवश्य करता है।
* मूल-प्रवृत्तियों से सम्बद्ध - संवेग का सम्बन्ध मूल-प्रवृत्ति या जैविक तीव्र उत्तेजना से होता है। मूल प्रवृत्ति द्वारा अपनी सन्तुष्टि की आवश्यकता उत्पन्न होने पर या सन्तुष्टि में अवरोध उत्पन्न होने पर संवेग का प्रकटीकरण होता है।

Dr. Arun Kumar Ray